अध्याय १

कार्ल

"मम्मी उठो, सुबह हो गई है।" कार्ल की इस हल्की सी पुकार पर मैंने उत्साहपूर्वक आँखें खोली। मैंने कहा, "हां बेटे, मैं जाग गई हूं।" इससे पहले कि मैं बिस्तर से नीचे फर्श पर पैर रखती, वह तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया।

मैं मुंह धोकर तौलिये से पोंछ ही रही थी कि मुझे रसोईघर में कपों के खड़खड़ाने की आवाज सुनाई दी। मैंने एक झलक में देखा कि कार्ल चाय पीते-पीते तैयार भी हो रहा है। वह अपनी ड्रेस, स्वेटर आदि पहन रहा था तथा जूतों के फीते भी बांध रहा था। कुछ क्षण बाद वह टोपी तथा चाबुक हाथों में लिये मेरे पास आकर बोला, "मम्मी जल्दी करो, मुझे काम पर जाने में देरी हो रही है" उसकी यह जल्दबाजी देखकर मैंने झट से अपने बैग में दूरबीन, पैन, कापी आदि वस्तुएं डाली तथा उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ी।

जब हमारी कार रेसकोर्स पहुंची तब तक अंधेरा ही था। सुबह का यह सुहाना समय मुझे हमेशा भाता था। ओस से भीगी कोमल घास पर चहलकदमी करते हुए मैं इस खूबसूरत सुबह का आनन्द लेने लगी। पक्षियों के चहचहाने के मधुर स्वर तथा गीली धरती पर पेड़ों से गिरनेवाले लाल बादामों की 'धप' जैसी आवाज़ ने सुबह की इस वेला को खुशनुमा बना दिया था। घोड़ों को कसरत कराने के लिये तैयार किया जा रहा था। उनकी लगामें कसी जा रही थी और उनके हिनहिनाने की आवाजें सुनाई दे रही थी। सुबह के इस धुंधलके में कुछ दूरी पर कई अस्पष्ट आकृतियां रास्तों से गुज़र रही थी। जब मैं स्टैन्ड पर अपने स्थान पर बैठने लगी तब सूरज अन्धेरा चीरकर सुनहरी छटा बिखरने लगा था। दूरबीन लगाकर मैंने देखा

कि कार्ल मैदान पर शाही अन्दाज़ से घूम रहा था। अपनी सीट पर बैठते हुए मुझे ख्याल आया कि न जाने यह दिन कौन सी सौगात लेकर आयेगा।

१५ अप्रैल १९७९ का यह दिन मुम्बई घुड़दौड़ के उस सत्र का आखिरी दिन था।

इस सत्र में कार्ल ने ५४ से अधिक जीतें हासिल करके पुराना रिकार्ड तोड़ डाला था। इस दिन कार्ल अगर कुछ दौड़ें और जीत ले तो वह अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी से बहुत आगे हो जायेगा। कार्ल का निकटतम प्रतिद्वन्द्वी कार्ल से केवल चार दौड़ों से पीछे था। ऐसा होने पर कार्ल को चैम्पियनशिप ट्राफी मिल जाती तथा कार्ल का सपना सच हो जाता।

मेरी कल्पना में यह दृश्य आया कि हम विदेश जाने की तैयारी कर रहे हैं जहाँ कार्ल का मुकाबला बहुत ही कुशल घुड़सवारों से होने जा रहा है। दूसरे ही पल मन यथार्थ में लौट आया। देखते हैं कि भविष्य क्या रंग दिखायेगा?

उसी समय मुझे कार्ल के जन्म के समय का दृश्य याद आया। यह ४ अक्तुबर १९६० की बात है। कार्ल सात मास की अपरिपक्व गर्भावस्था के पश्चात पैदा हुआ था। इसी कारण से उसका वज़न केवल चार पौंड तथा चार औंस था। उसका शरीर बेहद कमज़ोर था। डॉक्टर ने हमें चेतावनी दी थी कि हमें किसी भी अनहोनी के लिये स्वयं को तैयार रखना होगा। इस निराशापूर्ण समाचार के कारण मैं इस शिशु की दीर्घायु की प्रार्थना होठों पर लिये चुपचाप रोती रहती थी।

पहली बार जब मैंने कार्ल के सिकुड़े हुए छोटे से चेहरे तथा कमज़ोर शरीर को देखा तो मेरा दिल करूणा से पसीज उठा। मैंने अधीर होकर उसे गले से लगाना चाहा परन्तु ऐसा न कर पाई क्योंकि डाक्टरों ने उसके शरीर पर जगह जगह नलियां लगाई हुई थी।

जैसे-तैसे दिन बीतने लगे। मैं हर बार उसके पास बैठते हुए आशाभरी नज़रो से प्रार्थना करती रहती थी। मुझे आशा थी कि मेरी इस प्रार्थना का कार्ल पर असर दिखाई देगा तथा हम लम्बे समय तक खुशी भरा जीवन साथ-साथ जियेंगे। विचारों की कड़ी जब-तब टूटने लगती क्योंकि नर्स थोड़े-थोड़े समय के बाद उसे खून की बोतल चढ़ा जाती थी। मेरी चिन्ता का कोई अन्त न था। नलियों के माध्यम से ही उसके नाजुक अंगों तक दूध तथा पानी की कुछ

बूंदे ही पहुंच पाती थी। वह कुछ भी नहीं पचा पा रहा था। यह सोच-सोच कर मैं बहुत निराश होने लगती थी कि मेरा बेटा कैसे जी पायेगा?

हर शाम कार्ल का शरीर नीला पड़ने लगता। डाक्टर तथा परिवार जन उसके आस पास मंडराते रहते थे तथा खतरा देखते ही आक्सीजन सिलैन्डर लाने के लिये भागते। किसी न किसी तरह संकट का वह दिन टल जाता। एक दिन और कार्ल के नाम हो जाता।

कार्ल में ऐसी दृढ़ तथा रहस्यमयी जीवनी शक्ति थी जो आगे आनेवाले वर्षों में बेहद उपयोगी साबित हुई।

कार्ल एक वीर तथा उत्साही बच्चे के रूप में बड़ा होने लगा। हालांकि वह देखने में छोटा सा तथा कमज़ोर दिखाई देता था परन्तु उसके अन्दर जीतने की इच्छा कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह अपने बड़े भाई नेविल्ल के साथ होड़ लगाने में पूरी शक्ति लगा देता था। नेविल्ल एक शानदार एथलीट के रूप में विकसित हो रहा था। उसने भिन्न-भिन्न खेलों में कुशलता हासिल कर ली और उसे बहुत से सम्मान भी प्राप्त हुए। उसे स्कूल के फ्लैगमार्च में झण्डा लेकर नेतृत्व करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

नन्हें कार्ल को अपने बड़े भाई की इस योग्यता तथा शक्ति से मुकाबला करने के लिये बहुत अधिक प्रयत्न करना पड़ता था। कभी-कभी लाचारी तथा गुस्से में वह हाथापाई पर उतर आता था। कई बार कार्ल अपने छोटे-छोटे परन्तु मज़बूत हाथों से गुस्से में भरकर नेविल्ल पर आक्रमण कर बैठता। ऐसा करते हुए वह एक बिगड़े हुए सांड की तरह दिखाई देता जो कि सिर नीचा किये तेज़ी से झपटता है। जो कोई भी ऐसे दृश्य को देखकर हंसता, उसे कार्ल के क्रोध का शिकार होना पड़ता।

दोनों भाईयों में इस प्रकार की स्पर्धा के बावजूद एक विशेष आत्मीय सम्बन्ध भी था। नेविल्ल जहां एक संरक्षक एवं बचावपक्षवाली भूमिका निभाता था वहां कार्ल एक हमलावर तथा लड़ाकू के रूप में होता था। मैं यह अच्छी तरह जानती थी कि कार्ल दृढ़-निश्चयी तथा ज़िद्दी होने के साथ-साथ परिवार के प्रति कोमल स्वभाववाला भी है। बिना कहे वह अपने दादा-दादी की छोटे-छोटे कामों में सहायता करता था तथा उन्हें आराम पहुंचाने की पूरी कोशिश करता था। छोटे बच्चों की संगति में उसे बहुत मज़ा आता था।

कभी-कभी तो वह किसी छोटे बच्चे को गोदी में बिठाकर घंटो उससे खेलता रहता। छोटे बच्चों से ऐसे लगाव का लाभ उसकी छोटी बहन टीना को मिला। जब कभी मैं उसकी शरारतों से परेशान होकर गुस्सा करने का मन बनाती और उसे सज़ा देना चाहती तो वह आकर मुझ से लिपट जाता और उसके चेहरे पर भोली मुस्कान आ जाती। ऐसे में मेरा गुस्सा कहां टिकता?

जब वह बहुत छोटा था तो उसे मेरी गोद में बहुत सुकून मिलता। बड़ा होने पर भी उसकी यह आदत नहीं छूटी और जब भी उसे अवसर मिलता तब वह मेरी गोद में सिर रखकर सो जाता था।

इन सब बातों के बावजूद कार्ल के विशेष प्रेम तथा भावुक आकर्षण का केन्द्र घोड़े ही थे।

उसकी प्राइमरी शिक्षा के वर्षों में ही हमें पता चल गया था कि वह अक्षर केवल इसलिये सीखना चाहता था ताकि वह अपने पसंद के घोड़ों और उनके सवारों को नाम तथा पहचान दे सके। कार्ल को अक्षर सिखाने का केवल यही तरीका था। उसके नायक घोड़ों को ट्रेनिंग देनेवाले तथा जॉकी होते थे और उसके खेल भी घुड़दौड़ से सम्बन्धित रोमांच वाले होते थे।

क्योंकि मुझे स्वयं घोड़ों से बहुत लगाव था इसलिये मेरा ज्यादा समय उन्हें चारा खिलाने, पानी पिलाने और उन्हें फिट बनाने में बीतता था। कार्ल को मेरे पीछे घोड़े की पीठ पर बैठकर अस्तबलों के इर्द-गिर्द घूमने में बहुत मज़ा आता था। यहां तक कि दो साल की छोटी सी आयु में वह अकेला घोड़े पर सवारी कर सकता था।

छुट्टियों में हम नियमित रूप से प्रसिद्ध पर्वतीय स्थान माथेरान जाया करते थे। मुझे माथेरान की एक धुंधभरी सुबह का वह दृश्य याद है जब दो साल का कार्ल एक राजकुमार की तरह घोड़े की शानदार सवारी करता हुआ वहां के बाज़ारों से गुज़र रहा था। इतने छोटे बच्चे का ऐसा आत्मविश्वास देखनेवालों को चकित कर रहा था। वे ऐसा नज़ारा देखकर खुशी से ताली बजाने लगे। कार्ल इस प्रशंसा से बेखबर अपनी धुन में मग्न होकर घुड़सवारी का आनन्द ले रहा था। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि घुड़सवारी के प्रति कार्ल का ऐसा प्रेम अनोखा तथा अनमोल है। मुझे लगा कि कार्ल की यह जादूगरी लोगों के दिलों में छा जायेगी।

क्रिसमस के त्यौहार पर अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता से खिलौनों की मांग करते हैं परन्तु कार्ल ऐसा नहीं करता था। उसे ऐसे अवसरों पर सिक्कों से भरे बैग की ज़रूरत होती थी।वह इन सारे सिक्कों को घर के पास स्थित बैंडस्टैन्ड पर घोड़ों की सवारी करने में खर्च कर डालता था। जब सारे सिक्के खत्म हो जाते तो वह हमसे और सिक्के मांगता। कार्ल उन सब सईसों का चहेता बन गया था जो किराया लेकर घोड़ों की सवारी कराते थे। वे कहते थे, “यह बच्चा जॉकी बनने वाला है।” ऐसा लगता था कि वे कार्ल के भविष्य को हमसे बेहतर जानते थे।

कार्ल सात वर्ष की आयु में ही घुड़सवारी में निपुण हो गया था। वह इस छोटी उम्र में बिना आसन के घुड़सवारी कर सकता था। कार्ल के इन प्रयासों तथा सफलताओं से खुश होकर हमने उसे छोटे कद का एक घोड़ा उपहार स्वरूप दिया। उस घोड़े को हमने ‘फ्यूरी’ नाम दिया क्योंकि कार्ल का स्वभाव भी ऐसा था।

फ्यूरी पर सवार कार्ल

परन्तु कार्ल का असली सपना केवल घोड़ों की सवारी करना नहीं था बल्कि घुड़दौड़ में भाग लेना था।

कार्ल को घोड़ों के प्रति इतना जुनूनी लगाव था कि वह तकियों को ही घोड़े मानकर उनपर ज़ीन कस देता था तथा चाबुकों से इतना पीटता था कि तकियों की रूई पूरे कमरे में इधर-उधर बिखर जाती। ऐसा करते हुए वह घोड़ों को आदेश भी देता था तथा बातें भी करता था। इस प्रकार उसने कई काल्पनिक दौड़ें जीतीं।

मुझे ऐसे एक अवसर की याद है। मैं अपने पति के साथ सिनेमा देखने के लिए जाने वाली थी। मैंने देखा कि कार्ल अपने कमरे में काल्पनिक घोड़ों से खेल रहा था तथा उन्हीं में मस्त था। तीन घंटे बाद जब हम घर लौटे तो उसे वैसे ही खेलते पाया। उसका पूरा शरीर पसीने से भरा हुआ था। वह ऊंची आवाज़ में ऐसे बोल रहा था, "यह कर्णसिंह है जो सोमवारियो घोड़े का जॉकी है। ओह! अब 'स्टार्म' आगे हो गया है।" कार्ल की आवाज़ में उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। अब कार्ल थक कर चूर हो गया था और तकिये पर निढाल होकर गिर गया। उसने पूरी बाहें फैला रखी थी। हम ऐसा दृश्य देखकर हैरान थे। कार्ल को पता ही नहीं चला कि हम कब घर से बाहर गये और कब लौटे। ऐसी थी घोड़ों के प्रति उसकी दीवानगी।

ऐसे में आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह कैसे पढ़ाई करता होगा वह अपनी ही दुनिया में खोया रहता। वह स्कूल का होमवर्क भी नहीं करता था। इस विषय पर शिक्षकों से उसे बार-बार कड़ी चेतावनी मिलती थी परन्तु उसके पास बहानों की कोई कमी न थी। जब अध्यापक उसे होमवर्क न करके आने के लिए डांटते तो वह मासूम बन कर उत्तर देता, "सुनिये सर! जब मैं पुस्तक लेकर रेसकोर्स के मैदान पर गया ताकि अपना पाठ याद कर सकूं परन्तु क्या हुआ कि मेरी पुस्तक एक घोड़ा ही खा गया।" इतिहास और भूगोल के विषय उसे दुखी करते थे जबकि घुड़दौड़ से सम्बन्धित विषय जैसे जीत, हार, लक्ष्य आदि के बारे में बात हो तो उसकी आंखों में एक चमक आ जाती थी। लगता है अपने पिता जिमी के घुड़सवारी करते हुए चित्रों को देख-देख कर उसके मन में घुड़सवारी के प्रति ऐसी चाह पैदा हुई होगी। कार्ल को घुड़सवारी से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने में बहुत आनन्द आता था। इस विषय पर उसे कोई नहीं हरा सकता था। कौन सा घोड़ा कौन सी रेस जीतेगा, कौन सा जॉकी अच्छा है और कौन सा नहीं – कार्ल को सब पता था। यदि हम घोड़ों और उनके सवारों के चित्र कार्ल को दिखाते और फिर उनके लिखे नामों पर हाथ रख कर छिपा देते तब भी वह उनके सही नाम बता देता था क्योंकि उसने कई बार इन घोड़ों को अपनी कल्पना में देखा था।

जब कार्ल दस वर्ष का हुआ तो उसने पहली बार जिमखाना रेस में भाग लिया। अपने 'फ्यूरी' घोड़े की सवारी करते हुए उसे इस रेस में सफलता

मिली परन्तु यह सफलता उसे पूरी तरह सन्तुष्ट न कर पाई। वह और बहुत कुछ चाहता था। अगले दिन फिर जिमखाना रेस के समय वह घोड़ों की रिंग के पास बैठा हुआ आशाभरी नज़रों से घोड़ों के मालिकों को आता-जाता देख रहा था। मेरे द्वारा यह पूछने पर की वह वहां क्या कर रहा है तो उसने बताया कि वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि कहीं किसी घोड़े का मालिक अपने घोड़े पर उसे बैठने दे तथा रेस में भाग लेने का अवसर दे।

मैंने उसे डांटा और कहा, “आओ अब चलो भी, बस बहुत हो गया। तुम्हारे पिताजी तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा कदापि नहीं देंगे।” ऐसा कहकर मैं उसे लगभग घसीटते हुए दर्शक स्टैन्ड की तरफ ले आई।

अगले रविवार कार्ल हमें बिना बताए फिर उसी जगह पर छिप कर बैठ गया। इस बार भाग्य ने उसका साथ दिया। वह किसी अजीब से दिखने वाले व्यक्ति को लेकर मेरे पास आया। कार्ल के चेहरे पर ख़ुशी दमक रही थी। “मम्मी! इस आदमी के पास कोई जॉकी नहीं है और यह चाहता है कि मैं इसके घोड़े पर सवार होकर रेस में भाग लूं। मम्मी प्लीज़! मुझे केवल एक बार ऐसा करने की अनुमति दो” उसने बहुत अधिक अनुनय की। मेरा हृदय इतना कठोर नहीं हो पाया कि मैं उसे मना करूं परन्तु हां करना भी कौन सा आसान था? इसके दो कारण थे। एक था कार्ल के पिता का गुस्सा और दूसरा था कार्ल का कम वज़न। कार्ल का वज़न तीस किलोग्राम मात्र था जबकि इस में भाग लेने के लिये पैंतालीस किलोग्राम का होना आवश्यक था। एक मित्र की सहायता से घोड़े पर अधिक वज़नी काठी लगवाई गई और एक भारी बैग बंधवा दिया। अन्ततः हम तैयार हो गये परन्तु अभी बुरा झटका लगना बाकी था। मैंने जैसे ही उस घोड़े पर नज़र डाली, मेरे तो होश ही उड़ गये। मैं इतनी दुखी हुई कि मेरा मन किया कि यहां से भाग जाऊं। यह घोड़ा बहुत कमज़ोर तथा मरियल तो था ही, सड़े-गले जख्मों और फोड़ों से भी भरा हुआ था। दौड़ना तो दूर की बात थी उससे ठीक से चला भी नहीं जा रहा था। कार्ल को इन सब की कोई परवाह नहीं थी। कार्ल के पिता उस समय रेसकोर्स कार्यालय में अधिकारी थे। उन्होंने जैसे ही यह सब देखा तो गुस्से से बिफर पड़े, “यह सब क्या हो रहा है?” परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता था। कुछ भी बदलना अब सम्भव नहीं था। प्रसन्नता से भरपूर कार्ल उस घोड़े पर बैठकर घुडदौड़ स्थल की ओर चल दिया।

रेस शुरू होने की घंटी बजी। मैं चिन्तित हो उठी। मेरी नज़रें कार्ल को खोज रही थी। कार्ल मैदान में कहीं नज़र नहीं आ रहा था। अन्य घोड़े विजयस्थल पर पहुंचने वाले थे परन्तु कार्ल और उसके घोड़े का कोई अता-पता नहीं था। मैंने दूरबीन लगाकर नज़र गड़ाई तो मुझे मैदान के एक छोर पर एक छोटी सी आकृति घोड़ा हांकते हुए नज़र आई। आखिरकार कार्ल विजयस्थल के पास पहुंचा और वो भी तब जब सारे घोड़े रेस समाप्त करके अपने-अपने अस्तबल में लौट चुके थे। इस सबके बावजूद कार्ल न रूका और न ही हताश हुआ। वह घोड़े पर जमा ही रहा तथा थोड़ी देर बाद शुरू होने वाली दूसरी रेस में भाग लेने के लिये तैयार दिखा। मैं उसकी तरफ दौड़ पड़ी क्योंकि मैं जानती थी कि अगर उसने दोबारा इस रेस में भाग लिया तो उसका हाल फिर से वैसा ही होगा।

इतना सब होने के बाद भी वह बहुत खुश था। उसपर इन सब बातों का कोई असर नहीं दिखाई दे रहा था कि उसका घोड़ा बदसूरत, बीमार तथा हड्डियों का ढ़ांचा मात्र था और चौकड़ी भरना तो दूर वह ठीक से चल भी नहीं सका था और सबसे पिछड़ गया था। कार्ल तो इस बात से प्रसन्न था कि वह जॉकी तो बना और रेस में भाग ले पाया। उसकी अपनी समझ के अनुसार वह दिन उसके लिये सफल था क्योंकि वह अपने सपने का कुछ अंश पूरा कर पाया।

साल बीतने लगे। उसे हर समय अपना सपना पूरा करने की जल्दी लगी रहती। जैसे ही वह पन्द्रह वर्ष का हुआ उसने जॉकी बनने के लाइसेंस के लिये आवेदन करना चाहा। उसने बहुत ज़िद की कि हम उसे इसके लिए अनुमति दें। हमने घर में बहुत विचार-विमर्श के बाद फैसला किया कि हमें कार्ल को इस बात की अनुमति देनी होगी। हम उसे इस बात के लिये मना नहीं कर सकते थे जो उसका जुनून बन गई थी। फिर भी हमने एक शर्त तो लगा ही दी कि आवेदन करने से पहले वह अपनी स्कूली शिक्षा तो पूरी करे। वह बहुत प्रसन्न था और दृढ़ निश्चय के साथ परीक्षा में बैठा कि अब उसका सपना शीघ्र पूरा होगा।

कार्ल अब उस दिन का बेसब्री से इन्तज़ार करने लगा।